

DR.KOMAL VERMA

ASSISTANT PROFESSOR GUEST

SNSRKS COLLEGE SAHARSA

LECTURE NO 28

B.A PART IST PAPER IST

1625 ई. में जेम्स प्रथम की मृत्यु के पश्चात् उसका पुत्र चार्ल्स प्रथम इंग्लैण्ड का शासक बना। संसद और राजा के मध्य चला आ रहा संघर्ष **चार्ल्स प्रथम** के काल (1625-1649 ई.) में भी जारी रहा। चार्ल्स प्रथम ने 1625 में 1629 ई. के मध्य तीन बार संसद की बैठकें बुलाई और तीनों बार संसद से उसके संघर्ष हुए तथा बिना किसी परिणाम पर पहुँचे ही संसद भंग कर दी गई। 1609 से 1640 ई. तक **चार्ल्स प्रथम** ने बिना संसद के ही शासन किया। वैधानिक इतिहास में इसे निरंकुश अथवा अनियन्त्रित शासनकाल कहा जाता है। परन्तु 160ई. में युद्धकालीन आर्थिक साधनों की पूर्ति हेतु चार्ल्स प्रथम ने लघु संसद का अधिवेशन बुलाया, परन्तु यह भंग कर दी गई।

इसके पश्चात् चार्ल्स प्रथम ने पुनः संसद की बैठक बुलाई, जो 'दीर्घ संसद' के नाम से विख्यात है। लघु संसद और दीर्घ संसद के द्वारा चार्ल्स प्रथम अपनी स्थिति को सुदृढ़ करना चाहता है। किन्तु उसे अपने मन्तव्य में सफलता नहीं मिली। धार्मिक मतान्तरों में संसद दो भागों में विभाजित हो गई और देश में उपद्रव प्रारम्भ हो गए। 1642 से इंग्लैण्ड में गृह युद्ध प्रारम्भ हो गया, जो 1649 ई. तक चला। यह गृह युद्ध 2 भागों में हुआ । प्रथम गृह युद्ध 1642 से 1646 ई. तक चला और द्वितीय 1646-1649 ई. तक चलता रहा।

इंग्लैण्ड में हुए गृह युद्ध के कारण

1642 ई. की ग्रीष्म ऋतु से 1648 ई. के अन्त तक के काल में इंग्लैण्ड में हुआ **गृह युद्ध एक धार्मिक एवं राजनीतिक संघर्ष** था, जो 1649 ई. में **चार्ल्स प्रथम** की मृत्यु के उपरान्त ही बन्द हुआ। इस गृह युद्ध के प्रमुख कारण निम्नलिखित थे

(1) चार्ल्स 'प्रथम' की निरंकुशता-

चार्ल्स प्रथम को राजा और संसद के मध्य अधिकारों के लिए संघर्ष अपने पिता से विरासत में प्राप्त हुआ था, जिसे उसने अपनी निरंकुश प्रवृत्ति के कारण विस्तृत रूप प्रदान कर दिया। वह एक

स्वेच्छाचारी, अपव्ययी एवं लोभी राजा था। धन प्राप्त करने के लिए वह कुछ भी करने को तैयार था। अपने पिता जेम्स प्रथम के समान राजा के दैवी अधिकारों का समर्थक होने के कारण उसे जनता तथा संसद द्वारा हस्तक्षेप पसन्द न था। उसका ग्यारह वर्ष का व्यक्तिगत शासन उसकी कठोरता और क्रूरता का स्पष्ट प्रमाण है, जिससे जनता उसकी विरोधी हो गई थी।

(2) चार्ल्स प्रथम की आर्थिक नीति-

गृह युद्ध का एक प्रमुख कारण चार्ल्स प्रथम की आर्थिक नीति थी। चार्ल्स प्रथम को फ्रांस व स्पेन के साथ चलने वाले युद्ध के लिए धन की अत्यधिक आवश्यकता थी। जब संसद ने धन की स्वीकृति नहीं दी, तो चार्ल्स प्रथम ने अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु धन प्राप्त करने के असंवैधानिक साधनों का सहारा लिया। उसने अनेक अवांछनीय कर लगाए, अपराधियों पर भारी जुर्माने किए, रिश्वत लेकर व्यापारियों को ठेके प्रदान किए तथा धनी व्यक्तियों से अनेक उपहार प्राप्त किए। उसने विभिन्न सम्पत्तियाँ बेचकर धन एकत्रित करना आरम्भ कर दिया। गलत साधनों से धन एकत्रित करने के कारण संसद उससे रुष्ट हो गई, क्योंकि कर लगाने का अधिकार संसद को प्राप्त था। चार्ल्स प्रथम ने बलपूर्वक संसद को दबाना चाहा, परिणामस्वरूप गृह युद्ध को बल मिला।

(3) चार्ल्स प्रथम की प्रशासनिक नीति-

संसद ने राजा से एक अधिकार-पत्र ([Petition of Right](#)) पर हस्ताक्षर करवाए थे, जिसके अनुसार किसी व्यक्ति को बिना कारण बताए बन्दी नहीं बनाया जा सकता था, सैनिक गृहस्थों के घर में नहीं ठहर सकते थे। इसके अतिरिक्त शान्तिकाल में सैनिक कानून लागू नहीं किया जा सकता था। आगे चलकर चार्ल्स प्रथम ने अधिकार-पत्र की धाराओं का उल्लंघन करना प्रारम्भ कर दिया। इससे दोनों पक्षों के मध्य मतभेद बढ़ने लगा और गृह युद्ध की स्थिति उत्पन्न हो गई।

(4) चार्ल्स प्रथम की धार्मिक नीति-

संसद और चार्ल्स प्रथम के मध्य संघर्ष का एक प्रमुख कारण चार्ल्स प्रथम की धार्मिक असहिष्णुता की नीति भी थी। यद्यपि चार्ल्स प्रथम स्वयं एंग्लिकन चर्च का अनुयायी था, परन्तु उसकी रानी तृतीया कैथोलिक धर्म की अनुयायी थी, जिसके कारण चार्ल्स प्रथम कैथोलिक कर्म के मानने वालों को विशेष सुविधाएँ देना चाहता था। किन्तु जनता उसकी इस विचारधारा की विरोधी थी। संसद में प्यूरिटन सदस्यों का बहुमत था। चार्ल्स प्रथम उनके द्वारा प्रस्तावित सुधारों को लागू नहीं करना चाहता था। धार्मिक नीति के कारण ही इंग्लैण्ड का स्कॉटलैण्ड से युद्ध भी हुआ तथा इंग्लैण्ड को अपमान सहन करना पड़ा।

(5) चार्ल्स प्रथम के मन्त्री-

चार्ल्स प्रथम के मन्त्री बकिंघम की हत्या के पश्चात अन्य मन्त्रियों वेण्टवर्थ और लॉड ने महत्व ग्रहण करना आरम्भ कर दिया था, परन्तु जनता उनकी क्रूरता और उत्पीड़क नीतियों के कारण उनसे घृणा करती थी। इनके कारण जनता को अत्यधिक कष्ट सहने पड़े। चार्ल्स प्रथम के ग्यारह वर्ष के व्यक्तिगत शासन में उन्होंने मनमाने तरीके से जनता का शोषण किया था, जिसके कारण जनता उनसे छुटकारा पाना चाहती थी। संसद द्वारा वेण्टवर्थ को फाँसी और लॉड के बन्दीकरण के पश्चात् चार्ल्स प्रथम संसद से बदले की भावना रखने लगा, जिससे स्थिति अत्यधिक तनावपूर्ण हो गई थी।

(6) सामाजिक कारण-

गृह युद्ध के विस्फोट के लिए कुछ सामाजिक कारण भी उत्तरदायी थे। संसद का नेतृत्व प्रमुख रूप से कर्मठ किसानों और साधारण व्यापारियों के हाथ में था, जबकि चार्ल्स प्रथम के समर्थक अधिकांशतः उच्च कोटि के व्यापारी अथवा जमींदार थे, जो आराम और विलासिता का जीवन व्यतीत कर रहे थे। 1590 ई. तक राजा और कुलीन वर्ग के स्वार्थ एक समान थे, किन्तु चार्ल्स प्रथम के शासनकाल में तनाव उत्पन्न होने लगा और दोनों के मध्य मधुर सम्बन्ध बनाए रखना कठिन हो गया। कुलीन तथा सामन्त वर्ग यह अनुभव करने लगे कि राजा व उसकी नीति उनकी प्रगति के मार्ग में बाधक है। राजा निरकुश राजतन्त्र का समर्थक था, किन्तु संसद राज्य के दैवी उत्पत्ति के सिद्धान्त विरुद्ध थी। अतः इंग्लैण्ड में गृह युद्ध का वातावरण तैयार हो गया था।